

## बदलते जलवायु परिवेश में वर्षा जल संग्रहण की संभावनाएं

वीरेन्द्र कुमार, पी. एस. ब्रह्मानंद, सुसमा सुधिश्री, खजांची लाल एवं ए. के. मिश्र

जल प्रौद्योगिकी केंद्र, भा.कृ.अनु.प.- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

ईमेल: v.kumardhama@gmail.com

भारत में भूमिगत जल का स्तर इसके प्राकृतिक पुनर्भरण की अपेक्षा तेजी से गिर रहा है। यह स्थिति देश के उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों में भयावह बनती जा रही है। इसका मूल कारण खराब जल प्रबंधन बताया जा रहा है। देश की बढ़ती जनसंख्या, उसके पेट भरने के लिए विस्तार पा रही खेती और पशुपालन, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण पानी की उपलब्धता दिन प्रतिदिन घटती जा रही है। पानी की वर्तमान स्थिति के संदर्भ में नीति आयोग ने भी जल के उचित उपयोग एवं प्रबंधन पर जोर दिया है। जल संकट को कम करने के लिए वर्षा जल संग्रहण के साथ-साथ ऐसी सिंचाई विधियों और कृषि पद्धतियों को अपनाने की आवश्यकता है। जो कम पानी लेती है और पानी की बचत भी करती है।

देश की लगभग आधे से अधिक खेती आज भी मानसून की बारिश पर निर्भर है। सामान्यतः मई के अन्त या जून के शुरू में मानसून भारत पहुंचता है। अगर इस दौरान वर्षा अच्छी होती है, तो पूरी अर्थव्यवस्था और खाद्य सुरक्षा के लिए एक बेहतर संकेत जाता है। पिछले तीन वर्षों से मानसून सीजन के दौरान हुई अच्छी वर्षा के कारण देश में अनाज, दालों और तिलहनों का बंपर उत्पादन हुआ है। जिससे कीमतों पर दबाव बना हुआ है। भारत की औसत वार्षिक वर्षा 1180 मि.मी. है। यदि देश के भौगोलिक क्षेत्रफल को देखा जाए तो भारत में 329 मिलियन हैक्टेयर में 292 मिलियन हैक्टेयर मीटर वर्षा होती है। इसमें से 75 प्रतिशत जल की प्राप्ति दक्षिण-पश्चिमी

मानसून (जून-सितम्बर तक) से होती है। बाकी जल की प्राप्ति शेष आठ महीनों में होती है। इस जल का एक बड़ा भाग जमीन द्वारा अवशोषण किया सोखा जाता है। भारत में एक अनुमान के आधार पर शुष्क तथा अर्द्र-शुष्क क्षेत्रों में कुल वर्षा का 70 प्रतिशत जबकि आर्द्र क्षेत्रों में 50 प्रतिशत ही प्रभावकारी होता है। बदलते परिदृश्य में आम नागरिकों, किसानों व ग्रामीणों को खेत का पानी खेत में और गांव का पानी गांव में संरक्षित करने का संकल्प लेना चाहिए। जल संरक्षण के प्रयास तेजी से किये जा रहे हैं। इस दिशा में विश्व के सारे देश प्रयासरत हैं। हमें भी अपने स्तर पर जल संरक्षण और जल बचाने की जिम्मेदारी उठानी होगी। इससे हम आने वाली पीढ़ियों के लिए मद्द्गार साबित होंगे।

आज जल संसाधनों का अत्यधिक दोहन होने से देश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पानी का संकट गहराता जा रहा है। इससे जीडीपी समेत व्यापार, शिक्षा, संस्कृति, रोजगार और स्वास्थ्य तक बुरी तरह प्रभावित होने लगते हैं। अतः यह प्रयास करना चाहिए कि वर्षा जल की बर्बादी को रोका जा सके और आने वाले कल को सुरक्षित किया जा सके। भारत के लिए थोड़ी वर्षा और प्राकृतिक संसाधन उपहार है। देश में कृषि योग्य भूमि का बहुत बड़ा क्षेत्र सूखाग्रस्त है। जो कुल उत्पादन का लगभग 44 प्रतिशत योगदान करता है। इसके साथ-साथ 40 प्रतिशत मानव एवं 60 प्रतिशत पशुपालन में देश की जनसंख्या के लिए सहयोग करता है। देश की बढ़ती जनसंख्या की

जरूरतों को पूरा करने के लिए वर्षा जल संरक्षण कर शुष्क क्षेत्रों को खेती योग्य बनाने की नितान्त आवश्यकता है। इन भूमियों को फसलों उत्पादन के अंतर्गत लाने से जहां एक ओर अतिरिक्त खाद्य व खाद्य पदार्थों की मांग पूरी करने में मदद मिलेगी, वहीं दूसरी तरफ वर्षा जल संग्रहण से गांवों में अनुकूल परिस्थितियों के निर्माण के फलस्वरूप बेहतर ग्रामीण आजीविका और रोजगार प्रदान किया जा सकता है। वर्षा के पानी का संरक्षण और उसे जमा करना बारानी खेती की सफलता का मूल आधार हैं। इन क्षेत्रों में वर्षा जल संग्रहण की तकनीकें और उन्नत सस्य विधियां अपनाकर कृषि उत्पादन और उत्पादकता बढ़ायी जा सकती है। अतः प्राकृतिक संसाधन संरक्षण और पर्यावरण के संदर्भ में वर्षा जल संग्रहण एक महत्वपूर्ण कदम है।



### आखिर क्यों जरूरी है वर्षा जल संग्रहण

1. जल संकट की समस्या को कम करने के लिए
2. निचले क्षेत्रों में बाढ़ की समस्या को कम करने में
3. तेजी से बढ़ती जनसंख्या के पीने के पानी की मांगों को पूरा करने में सहायक
4. भूजल संसाधनों में स्थिरता
5. बारानी क्षेत्रों में बेहतर फसलोत्पादन हेतु
6. भूजल स्तर में सुधार हेतु

7. जल निकायों का पुर्नजीवन
8. मृदा कटाव को रोकने में
9. बेहतर ग्रामीण जीवनयापन व रोजगार हेतु
10. हरित आवरण में वृद्धि हेतु

### वर्षा जल संग्रहण से तात्पर्य

वर्षा के पानी को एकत्र करके बाद में कृषि उत्पादन में इस्तेमाल करने को वर्षा जल संग्रहण कहा जाता है। आज अच्छी गुणवत्ता वाले पानी की कमी एक गम्भीर समस्या है। क्योंकि किसानों की लापरवाही से अच्छी गुणवत्ता वाला वर्षा जल शीघ्र ही बहकर नष्ट हो जाता है। जिन क्षेत्रों में पानी का अन्य कोई स्रोत न हो, वहां पर वर्षा जल को एकत्रित कर खेती के कार्यों में प्रयोग किया जा सकता है। शुष्क क्षेत्रों में फसलोत्पादन बढ़ाने हेतु वर्षा जल संग्रहण पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

### अत्यधिक वर्षा के दुष्प्रभाव

अत्यधिक एवं तीव्र वेग से वर्षा होने पर पानी के भूमि के अन्दर प्रवेश की गति धीमी हो जाती है। जिसके परिणामस्वरूप पानी भूमि की ऊपरी सतह पर तेजी से बहने लगता है। वर्षा होने के कारण नदियों के प्रवाह मार्ग में अधिक जल समा नहीं पाता, जल का बाहर की ओर फैलना आरम्भ हो जाता है तथा बाढ़ आ जाती है। बाढ़ के कारण खेतों, सड़को, रेल लाइनों एवं बस्तियों में पानी फैल जाता है। इसके अलावा बाढ़ से खड़ी फसल डूब जाती है। सड़के, बांध, पुल एवं रेल लाइनें टूट जाती है। भयंकर बाढ़ से मनुष्यों एवं पशुओं का जीवन संकटमय हो जाता है तथा अनेक प्रकार की बीमारियां का प्रकोप बढ़ जाता है। इससे भूमि की उपजाऊ शक्ति में कमी के साथ-साथ मृदा क्षरण भी होता है।

### बदल रहा वर्षा का ट्रेंड

विशेषज्ञों के अनुसार आमतौर पर जनवरी से मार्च के दौरान सबसे अधिक बारिश फरवरी में दर्ज होती है, लेकिन पिछले कई वर्षों से इस ट्रेंड में बदलाव देखने को मिल रहा है। मार्च में ओले भी गिरने का ट्रेंड दो साल के दौरान ही बढ़ा है। बारिश ने इस बार मार्च महीने के सभी रिकॉर्ड तोड़ दिये हैं। किसानों के लिए यह किसी समस्या से कम नहीं है। इससे गेहूँ, आलू, मटर, टमाटर, सब्जियों, फलदार पौधों व अन्य रबी फसलों को काफी नुकसान पहुंचता है। फसलों को ओलावृष्टि, अतिवृष्टि और बेमौसम वर्षा से भी नुकसान पहुंचता है। इसके अलावा वर्षा के बदलते परिदृश्य और भारी बारिश से वसंत और खरीफ ऋतु की फसलों की बुवाई भी प्रभावित हुई है।

### वर्षा आधारित क्षेत्रों में बढ़ता कृषि उत्पादन

देश में अधिकांश फसलें वर्षा के भरोसे होती हैं। इसलिए किसान भाई बड़ी बेसब्री से मानसून का इंतजार करते रहते हैं। बारानी क्षेत्र प्रायः ढलान युक्त पाये जाते हैं। इन क्षेत्रों में वर्षा जल संग्रहण और फसलों की बढ़वार इस बात पर निर्भर करती है कि उस खेत का ढलान किस किस प्रकार का है। तथा इस क्षेत्र में उपजाऊ मृदा किस गहराई तक है। देश में दालों का उत्पादन बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत अभियान चलाया गया। इसके अंतर्गत शुष्क क्षेत्रों या कम वर्षा वाले इलाकों में दालों की खेती को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलायी गयीं। वर्ष 2009-10 में जहां 14.66 मिलियन टन दालों की पैदावार होती थी, वही वर्ष 2020-21 में यह 25.72 मिलियन टन हो गई है।

जबकि देश की जनसंख्या के लिए 28 मिलियन टन दालों की आवश्यकता होगी। इस तरह आज हमारा देश दालों के उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया है। इस संबंध में बारानी क्षेत्रों में वर्षा जल प्रबंधन

की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। इसके अलावा प्राचीन भारत में मोटे अनाजों की काफी खेती होती थी। परन्तु एक ऐसी अवधि आयी जिसमें गेहूँ एवं धान की फसलों के कारण मोटे अनाज कुछ पीछे हो गये। लेकिन वर्तमान समय में एक बार फिर लोग मोटे अनाजों के प्रति जागरूक हो रहे हैं। गर्भावस्था के दौरान मां एवं शिशु में कुपोषण की समस्या को दूर करने में मोटे अनाजों की बड़ी भूमिका रही है। कोदों, कुटकी, सांवा, काकुन, रागी, जवा, जोंहरी जैसे मोटे अनाज रेशायुक्त होते हैं जो पौष्टिक तो हैं ही, साथ ही इनकी खेती भी अपेक्षाकृत आसान है। इनमें पानी संचित कर लेने का गुण है। इसलिए ज्यादा सिंचाई नहीं करनी पडती है। यह कम पानी वाली कमजोर जमीन में भी आसानी से उगायी जा सकती है। इस कारण ये पर्यावरण के लिए ज्यादा बेहतर होती है। देश में लगभग 95 प्रतिशत ज्वार व बाजरा तथा 90 प्रतिशत मोटे अनाजों का उत्पादन वर्षा आधारित क्षेत्रों से ही आता है। इसके अलावा 91 प्रतिशत दालों और 77 प्रतिशत तिलहनों की पैदावार भी बारानी क्षेत्रों में होती है।



### सरकारी प्रयास और योजनाएं

केन्द्रीय बजट 2020-21 में जल संकट से सबसे ज्यादा ग्रस्त 100 जिलों की पहचान की गयी। इन जिलों में भूजल स्तर बढ़ाने, जल संरक्षण और वर्षा

जल संग्रहण के उपायों पर जोर दिया गया। जब भी देश में जल संकट की चर्चा होती है, तो उसमें ज्यादातर फोकस पीने के पानी पर ही होता है। लेकिन दुर्भाग्यवश आज पूरे देश में जल संकट के कारण कृषि सबसे गंभीर मुश्किल से गुजर रही है। यह संकट तीन प्रकार का है- प्रथम जहां भूजल 500 फीट से ज्यादा नीचे चला गया है और आने वाले 5 या 10 साल में पूरी तरह सूखने वाला है। दूसरा जहां पानी है, लेकिन खारा होने की वजह से खेती में प्रयोग नहीं किया जा सकता और तीसरा जहां रासायनिक उर्वरकों और भारी भरकम कृषि यंत्रों के अत्यधिक प्रयोग के कारण मिट्टी की ऊपरी सतह के नीचे एक ठोस रासायनिक परत बन गई है। जिसके कारण वर्षा का पानी भूजल में नहीं मिल पाता और इधर-उधर बहकर नष्ट हो जाता है। साथ ही अपने साथ बहुमूल्य उपजाऊ मृदा को भी बहा ले जाता है या फिर बाढ़ जैसी स्थितियां पैदा करता है। इस समस्या के समाधान हेतु जल संकट का सामना कर रहे 100 जिलों के लिए व्यापक योजना बनायी गयी।

### अटल भूजल योजना

इसी प्रकार भूजल स्तर बढ़ाने के लिए 25 दिसम्बर, 2019 को अटल भूजल योजना की शुरुवात की गयी। इसके तहत पानी के प्रभावी उपयोग, जल सुरक्षा और उपयुक्त जल बजट पर जोर दिया गया। वर्ष 2019 में 01 जुलाई से भारत सरकार ने जल शक्ति अभियान शुरू किया था। जिसका उद्देश्य बारिश के पानी को बचाकर उसके माध्यम से भूजल स्तर को बढ़ाना है। इसके अलावा वर्षा आधारित क्षेत्रों में एकीकृत कृषि प्रणाली का विस्तार किया जायेगा। जीरो बजट प्राकृतिक खेती पर भी जोर दिया जायेगा। वर्षा जल इन प्रणालियों का अभिन्न अंग है। किसानों को वित्तीय और जल सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से

कुसुम यानि किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थापन महाभियान योजना शुरू की गयी है। केन्द्र सरकार ने 'हर खेत को पानी' के लक्ष्य के साथ प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना की शुरुआत की है। इसके तहत देश के हर जिले में समस्त खेतों तक सिंचाई के लिए पानी पहुंचाने की योजना है। पीएमकेएस योजना का उद्देश्य सिंचाई के संसाधन विकसित करने के साथ-साथ वर्षा के पानी को छोटे स्तर पर जल संचय करना तथा जल का वितरण करना है। इसके अलावा मनरेगा के तहत किसानों के खेतों पर तालाब निर्माण किये जा रहे हैं।

### अमृत सरोवर योजना

आजादी के अमृत महोत्सव पर देशभर में अमृत सरोवर तैयार करने का आह्वान सरकार द्वारा किया गया है। मनरेगा व अन्य विभिन्न सरकारी योजनाओं के तहत उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करते हुए प्रत्येक जिले में 15 अगस्त, 2023 तक कम से कम 75 अमृत सरोवरों के लिए मानक निर्धारित कर दिये गये हैं। इनके लिए एक एकड़ या इससे अधिक जमीन पर तालाब की खुदाई की जानी चाहिए। अमृत सरोवरों के निर्माण में मनरेगा की प्रमुख भूमिका होगी। इसके अलावा 15वें वित्त आयोग की ग्रांट, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना व हर खेत को पानी आदि योजनाओं के साथ-साथ गैर सरकारी संगठनों का सहयोग भी इनके लिए लिया जा सकता है। इनके लिए अलग से भी धनराशि शासन द्वारा उपलब्ध कराई जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों के पुराने तालाबों को अमृत सरोवरों के रूप में विकसित करने के लिए यह सुनिश्चित किया जायेगा कि इनमें गंदा पानी न आये तथा केवल वर्षा का पानी ही उसमें जमा हो। जिसका उपयोग भूजल रिचार्ज में भी किया जा सके। तालाब में पानी का स्तर 3 मीटर तक बनाये रखने की अपेक्षा की गई है। ऐसे अमृत सरोवरों पर

पक्के घाट, पथ निर्माण एवं बैठने और नौकायन की व्यवस्था कर पिकनिक स्थल के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। अमृत सरोवरों को विकसित करके प्रतिवर्ष 15 अगस्त को तिरंगा झंडा वही फहराया जायेगा। ऐसा पहला अमृत सरोवर उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले में पटवाई में विकसित किया गया है। देश के अन्य जिलों में भी अमृत सरोवरों को विकसित करने का काम प्रगति पर है। इसी कड़ी में पूसा संस्थान में भी एक अमृत सरोवर का निर्माण किया गया है। जिसकी क्षमता 50 हजार घन मीटर है। जिसमें संस्थान के आवसीय परिसर और फार्म प्रक्षेत्र का वर्षा जल संग्रहित किया जा रहा है।

### कैच दरैन

जल संरक्षण की दिशा में एक और पहल करते हुए 22 मार्च, 2021 को विश्व जल दिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 30 नवम्बर, 2021 तक चलने वाले जल शक्ति अभियान 'कैच द रेन' अभियान की शुरुआत की। इस अभियान का उद्देश्य वर्षा की बूंदों को सहजते हुए जल का संरक्षण करना है। इसके लिए मानसून आने तक मनरेगा के तहत किये जाने वाले व्यय का इस्तेमाल जल संरक्षण की दिशा में किया जायेगा।



### वर्षा जल संग्रहण की तकनीकें

1. मेंडबंदी करना
2. फार्म पौंड का निर्माण
3. ग्रीष्म-कालीन गहरी जुताई

4. खाई खोदकर वर्षा जल संग्रहण
5. अद्योभूमि की कठोर परतों को तोड़ना
6. लेजर विधि द्वारा खेतों का समतलीकरण
7. बहु-उद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएं
8. वाटरशेड प्रबंधन

### वाटरशेड का वर्गीकरण

1. मेक्रो वाटरशेड- 50,000 हेक्टेयर से ज्यादा क्षेत्र
2. सब वाटरशेड- 10,000-50,000 हेक्टेयर क्षेत्र
3. मिली वाटरशेड- 1,000-10,000 हेक्टेयर क्षेत्र
4. माइक्रो वाटरशेड- 100-1000 हेक्टेयर क्षेत्र
5. मिनी वाटरशेड- 1 से 100 हेक्टेयर क्षेत्र

### भारत में वर्षा जल संग्रहण की संभावनाएं

सतत खेती में वर्षा जल संग्रहण अहम भूमिका निभा सकता है जैसा कि अभी हाल के कुछ वर्षों में हुए अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि सिंचित क्षेत्रों में सतही व भूमिगत जल के अनुचित व



अत्यधिक दोहन के कारण भूजल स्तर निरन्तर नीचे गिरता जा रहा है। जिसका भूमि के उपजाऊपन, मृदा स्वास्थ्य व फसलों की उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। फसलों में अंधाधुंध सिंचाई व सिंचाई संख्या बढ़ाने से न केवल जल का अपव्यय होता है, बल्कि उत्पादन लागत भी बढ़ती है। वर्तमान परिवेश में सघन फसल प्रणाली व मशीनीकरण की वजह से भूजल पर दबाव इतना बढ़ गया है कि भूमिगत जल

स्तर दिनों दिन नीचे गिरता जा रहा है। खेती में पारंपरिक सिंचाई प्रणाली उपयोग में लाई जा रही है। जिसमें खेतों में सिंचाई जल लबालब भर दिया जाता है। इससे काफी सारा पानी इधर-उधर बहकर या जमीन में रिसकर नष्ट हो जाता है। इसके अलावा हमारे देश में गत कई वर्षों से उपज में आई स्थिरता चिन्ता का विषय बनी हुई है। इसके लिए सिंचाई जल की कमी व दोषपूर्ण कृषि प्रणाली प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार है।

मानव और जलवायु परिवर्तन संबंधी कारक कृषि उत्पादन के टिकाऊपन को और अधिक कम करते हैं। वर्ष 2050 तक वैश्विक जनसंख्या के 9 बिलियन तक पहुंचने की संभावना है। जिसके भरण पोषण के लिए कृषि उपज में बढ़ोतरी करने की आवश्यकता है। जबकि महत्वपूर्ण संसाधन जैसे मृदा, उर्वरक और जल सतत रूप से घटते जा रहे हैं। अधिक खाद्यान्न उत्पादन को सुनिश्चित करने के उपायों में से एक वर्षा आधारित क्षेत्रों में वर्षा जल संग्रहण कर फसल उत्पादकता बढ़ायी जा सकती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बारानी क्षेत्रों में वर्षा जल संरक्षण की उन्नत तकनीकें अपनाकर उत्पादन बढ़ाने की काफी संभावनाएं हैं।

मृदा की ऊपरी सतह बहुत महत्वपूर्ण प्राकृतिक स्रोत हैं। इस सतह में पौधों को उगने में मदद मिलती है। वर्षा ऋतु में अनियंत्रित पानी लाखों हैक्टेयर उपजाऊ भूमि को काट-काटकर बंजर बना रहा है। वर्षा जल के साथ हर वर्ष कई सौ मिलियन टन मिट्टी बहकर नष्ट हो जाती है। जिसके फलस्वरूप मृदा उर्वरता व उपजाऊपन घटता जा रहा है। दूसरी तरफ कृषि उत्पादन का महत्वपूर्ण घटक सिंचाई जल बहकर नष्ट हो जाता है। किसानों की जरा सी लापरवाही से खेतों में सैकड़ों सालों में जमा उपजाऊ मिट्टी बारिश के साथ बह जाती है। एक कृषि प्रधान

देश के लिए उपजाऊ कृषि भूमि का ऐसा तिरस्कार उचित नहीं है। अतः ऐसी परिस्थितियों में, विशेषकर उत्पादन बढ़ाने, भूजल स्तर में सुधार करने एवं पर्यावरण संतुलन सुनिश्चित करने में वर्षा जल संग्रहण ही एक अच्छा विकल्प है। इसलिए निश्चित तौर से कहा जा सकता है कि वर्षा जल संग्रहण अपनाएने की अत्यंत आवश्यकता ही नहीं बल्कि भविष्य में इसकी अच्छी संभावनाएं भी हैं।

### जन-जागरूकता अभियान

वैज्ञानिकों और कृषि विशेषज्ञों को वर्षा जल संग्रहण व अनुसंधान में नये पन पर जोर देने व विकसित तकनीक को लैब टू लैंड प्रोग्राम के तहत आम जनता व किसानों तक पहुंचाने के लिए जोर देना चाहिए। विभिन्न प्रशिक्षण और सूचना साहित्य के वितरण द्वारा उपरोक्त तकनीकों को किसानों के बीच लोकप्रिय बनाने की नितान्त आवश्यकता है। जिससे इन तकनीकों का प्रयोग कर वर्षा जल का बेहतर प्रबंधन किया जा सके। किसानों व ग्रामीणों को जल संकट के दुष्परिणामों से भी अवगत कराया जाना चाहिए। इसके लिए किसान सम्मेलन, किसान संगोष्ठी, जल दिवस एवं किसान मेलों का आयोजन किया जा सकता है। जिससे किसान खेती से अधिक उत्पादन लेने हेतु जल संसाधनों का सोच-समझ कर प्रयोग करें। इसके लिए पूर्ण प्रचार एवं प्रसार की आवश्यकता है। ताकि किसानों का रूझान वर्षा जल की बर्बादी जैसी गम्भीर समस्या की ओर किया जा सके।

### सारांश

यदि समय रहते हमने वर्षा जल संग्रहण पर विशेष जोर नहीं दिया तो भविष्य में गम्भीर खाद्य समस्या, पेय जल संकट व विभिन्न आपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। अतः वर्षा जल संग्रहण के लिए असरदार कार्य व्यापक तौर पर करने की

आवश्यकता है। भविष्य में हमें खेती में वर्षा जल का अधिकतम व विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा। जिससे जल संकट जैसी गम्भीर समस्याओं से मुक्ति मिल सके। हम वर्षा जल को प्रकृति की ओर से दिया गया निशुल्क उपहार मान कर ऐसे ही छोड़ देते हैं। जिससे यह बहुमूल्य पानी इधर-उधर बहकर बर्बाद हो जाता है। इस पानी को बचाने की जरूरत है। इसके लिए

आवश्यक है कि जन भागीदारी और सामूहिक प्रयासों से इस समस्या से निपटा जाय। क्योंकि सामूहिकता में बहुत शक्ति होती है। अतः किसान भाई पानी की कमी वाले क्षेत्रों में वर्षा जल संग्रहण की उन्नत तकनीकों का उपयोग कर संसाधन संरक्षण के साथ-साथ खेती से बेहतर आय भी प्राप्त कर सकते हैं।

\*\*\*